थॉर्नडाइक के सिद्धान्त का शिक्षा में महत्व (Educational Implications of Thorndike's Theory of learning)

शिक्षा के क्षेत्र में इस सिद्धान्त के महत्व को निम्न प्रकार से व्यक्त किया जा सकता है-

(1) इस सिद्धान्त द्वारा बालक पहले की गई गलतियों से होने वाले अनुभवों से लाभ उठाता है तया उसके व्यवहार में सुधार आता है।

(2) यह सिद्धान्त निरन्तर प्रयास पर बल देता है। इसलिये बालक किसी भी समस्या से घबराता नहीं है। उसमें धैर्य और परिश्रम के गुणों का विकास होता है।

(3) यह सिद्धान्त अभ्यास की क्रिया पर आधारित है जिससे सीखा गया कार्य स्थायी बनता है। यदि कोई वालक अपने किसी कार्य में असफल हो जाता है तो अध्यापक को चाहिये कि वह तब तक विद्यार्थी को प्रयास करने के लिये प्रोत्साहित करता रहे जब तक कि वह सफलता प्राप्त न कर ले।

(4) इस सिद्धान्त के अनुसार बालक को लक्ष्य तो मालूम होता है लेकिन यहाँ तक पहुँचने का सही तरीका उसे मालूम नहीं होता। विभिन्न प्रयासों के द्वारा वह लक्ष्य प्राप्ति का सही तरीका ज्ञात करता है जिसमे उसमें आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास के गुणों का विकास होता है जो बालक को भावी जीवन की समस्याओं से लड़ने के लिये तैयार करता है।

(5) इस सिद्धान्त के द्वारा बालक आशावादी और असफलता में सफलता देखने वाला बनता है।

(6) यह सिद्धान्त बड़े और मंदबुद्धि बालकों के लिये विशेष रूप से उपयोगी है।

(7) समस्या समाधान के क्षेत्र में इस सिद्धान्त का सफल प्रयोग किया जा सकता है।

(8) यह सिद्धांत 'करके-सीखने पर अधिक बल देता है।

(9) इस सिद्धान्त के अनुसार बालकों को सिखाते समय उनकी व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर ध्यान दिया जाना चाहिये।

(10) इस सिद्धान्त के अनुसार छात्र की मनोवृति का अधिगम से गहरा सम्बन्ध है। इस दृष्टि से छात्रों को कुछ भी सिखाने से पूर्व कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना नितान्त आवश्यक है।

(11) इस सिद्धान्त में प्रेरणा पर बहुत अधिक बल दिया जाता है। अतः बालकों को कुछ सिखाने से पूर्व उन्हें भली प्रकार अभिप्रेरित कर लेना चाहिए।

(12) इस सिद्धान्त में सूझ या अन्तर्दृष्टि का भी प्रयोग किया जाता है जो विभिन्न जटिल समस्याओं को हल करने में बहुत सहायक सिद्ध होती है।

(13) इस सिद्धान्त में बार-बार दोहराई गई प्रक्रिया के परिणामस्वरूप आदतों का निर्माण होता है। साथ ही, बालकों की बुरी आदतों को सुधारने में इस सिद्धान्त का सार्थक योगदान रहता है।

(14) यह सिद्धान्त मौखिक अभ्यास पर बहुत अधिक बल देता है जो व्याकरण, संगीत एवं गणित जैसे विषयों की दृष्टि से अत्यन्त उपयोगी है।

(15) इस सिद्धान्त के अनुसार यदि बालक बार-बार भूल करता है तो अध्यापक को चाहिये कि यह भूल सुधार के संकेत विद्यार्थी को दे दे। यदि विद्यार्थी किसी कठिन समस्या का हल अनेकों प्रयास के पश्चात भी नहीं कर पाता है तो उसे समस्या का सही समाधान बता देना चाहिये ताकि उसमें हीन भावना उत्पन्न न हो सके।